SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

डॉ विद्या बिंदु सिंह के कथा साहित्य में भावात्मक बुद्धि व स्व–जागरूकता द्वारा समाज में लोक संस्कृति व लोकचेतना की भावना

डॉ. स्वर्णा, निर्देषिका, वनस्थली विधापीठ
सरिता पारिक, षोधार्थी, स्नेह टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, मुहाना, सांगानेर, जयपुर, saritajpr84@gmail.com

सराष

"विद्या बिंदु सिंह लोक संस्कृति के अदिति प्रवक्ता है'' इस वाक्य का अर्थ है कि वह अपनी कहानियों के माध्यम से लोक संस्कृति के अद्वितीयता को उजागर करते हैं। उनकी कहानियों में लोक संस्कृति का प्रतिबिंब बहुत सुंदर रूप से प्रकट होता है। उनकी कहानियाँ गाँव की जीवनशैली, लोक कथाएँ, परंपराएँ, और संस्कृति को महसूस करने और समझने के लिए यथार्थवादी और अपनी विलक्षणता के साथ जानी जाती हैं। उनके किस्से अक्सर गाँव के लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी, उनके विचार, उनके संघर्षों, और उनकी सामाजिक संगठन में उत्तेजित होते हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से लोक संस्कृति की अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि लोक कथाएँ, विरासत, परंपराएँ, धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव, और ग्रामीण समाज के मूल्य। इस तरह, उनके किस्से एक सामूहिक अनुभव के रूप में लोक संस्कृति को दर्शाते हैं और पाठकों को उसकी महत्वपूर्णता का अहसास कराते हैं। वे लोक कथाओं के माध्यम से लोक संस्कृति व लोकचेतना में गहरी संवेदनशीलता और जनसाहित्य का संदेश मिलता हैं। अतःउन्होंने अपनी कहानियों में बच्चों से लेकर वयस्कों तक लोक संस्कृति के महत्व को पहुंचाने का प्रयास किया है।

मुख्य षब्दावली– भावात्मक बुद्धि, स्व–जागरूकता, लोक संस्कृति, लोकचेतना,

परिचय

डॉ. विद्या विंदु सिंह लोक साहित्य के क्षेत्र में जाना माना नाम हैं। कहानी, कविता, निबंध, उपन्यास, लोकगीत हर विषय पर उन्होंने अपनी कलम चलाई है पर सबसे ज्यादा उनको अवधी लोकसाहित्य के लिए सराहना मिली है। विद्या विंदु सिंह का जन्म फैजाबाद के जैतपुर गांव में 2 जुलाई, 1945 को हुआ था। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एमए और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पीएचडी किया। अब तक 118 रचनाएं उनकी प्रकाशित हो चुकी हैं जो हिंदी और अवधी में हैं। कई देशों की यात्राएं कर चुकी हैं। अवधी भाषा का साहित्य हो या अवधी लोक गीत, राम इसके प्राण हैं। राम ही इसके मुख्य पात्र हैं। अपनी रचनाओं में राम और सीता को सहज भाव से चित्रित करने वालीं, रामकथा के कई अनसुने प्रसंगों को सहेजने वाली हिंदी और अवधी की लेखिका, समीक्षक डॉ. विद्या विंदु सिंह को पद्म श्री, 2022 से नवाजा गया है। इनकी 118 रचनाएं प्रकाशित हैं जिनमें कविता संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यास, लोकगीत संग्रह भी हैं। उन्होंने खास तौर पर अवधी लोक गीतों पर काम किया है। साथ ही सीता के विषय में उनकी रचना 'सीता सुरुजवा क ज्योति' भी बहुत चर्चित रही है। भोजपुरी और मैथिली जैसी भाषाओं को आठवीं अनुसूची में शामिल करने को लेकर डॉ. विद्या सिंह कहती हैं कि किसी भी भाषा या बोली को आंदोलन से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि इस पर काम किया जाए। अवधी या किसी भी दूसरी भाषा को लिखकर, बोलकर या इस पर काम करके ही आगे बढ़ाया जा सकता है।

कथा साहित्य में भावात्मक बुद्धि एवं स्व–जागरूकता

विद्या बिंदु सिंह के कथा साहित्य में भावात्मक बुद्धि और स्व–जागरूकता का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानियों में वे गहरी भावनाओं को उजागर करते हैं और अपने पाठकों को लोक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी रचनाएँ लोक जीवन की सामाजिक और मानवीय चुनौतियों को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती हैं और पाठकों को आत्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करती हैं। इस तरह, उनकी कथाओं में भावात्मक बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान है जो पाठकों को समझदारी और संवेदनशीलता की दिशा में प्रेरित करता है। उनके उपन्यास में भावात्मक बुद्धि से संबंधित सुविचार भाव इस प्रकार है **1.सोलह साल की उम्र में मंगल का जन्म हो गया था और वह सुकुमार कली फूल बनते ही मुरझाकर झड गई थी। गंगा सोचती थी कि दीदी का कम उम्र में मॉ बनना ही उसकी मौत का कारण था।** 2.**हम कन्या का दान नहीं कर रहे हैं उसे एक जीवन साथी दे रहे परिवार दे रहे हैं। इसके बाद हमारी बेटी दो परिवारों, दो कुलों की गरिमा बन जायेगी।** विद्या बिंदु सिंह के कथा साहित्य में लोक संस्कृ

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

ति स्व–जागरूकता को बढ़ावा देने का अहम धारक है। उनकी कहानियाँ गाँव के जीवन, परंपराएँ, और संस्कृति को महसूस करने और महत्वाकांक्षा को समझने में मदद करती हैं। उन्होंने लोक कथाओं, गानों, और रीति–रिवाजों के माध्यम से अपने पाठकों को लोक संस्कृति के महत्व को समझाया है और उन्हें अपनी पहचान के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। इसके फलस्वरूप, पाठक अपने संदर्भ में गर्व और संबंध का अनुभव करते हैं। स्व–जागरूकता से संबंधित कुछ सुविचार भाव उनके लेख में देखने को मिलते है 3.**मैं सबसे दहेज और झूठी शान के दिखाने के विरोध में बात करता हूँ और स्वयं वही करू मेरी कथनी और करनी में ईमानदारी नहीं' रह जाएगी 2. नदी में गंदगी धोना बंद करने के लिए कई संस्थाएं लोगों को जागरूक कर रही थी, जोगा नदी के तट से धोबी के पाट अब हटाए जा रहे थे।**

लोक संस्कृति,साहित्य ख्याति

लोक संस्कृति का महत्व विशेष है क्योंकि यह हमारी समाज की आत्म–पहचान, भावनात्मक संवेदनशीलता, और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है। लोक संस्कृति हमें हमारे इतिहास, परंपराएं, और मूल्यों का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करती है और हमें हमारे रूढ़िवादी सोच को छोड़कर अधिक उत्तेजित और समर्थनशील बनाती है। इसके अलावा, लोक संस्कृति हमें भाषा, संगीत, नृत्य, कला, और अन्य कलाओं के माध्यम से जुड़ती है और हमें आपसी संबंधों को स्थापित करने में मदद करती है। इसलिए, लोक संस्कृति हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो हमें समृद्धि, सामाजिक समरसता, और सामाजिक न्याय की दिशा में अग्रसर करता है। इसी तरह विद्या विंदु सिंह को सबसे ज्यादा ख्याति लोक साहित्य में मिली। इसमें अवधी भाषा के लोकगीत, मुहावरे, राम से जुड़े कई ऐसे प्रसंग भी हैं जिनको सिर्फ कहा और सुना जाता रहा है। उनके लिखे उपन्यासों में अंधेरे के दीप, फूल कली, हिरण्यगर्भा, शिव पुर की गंगा भौजी हैं। वहीं कविता संग्रह में वधुमेव, सच के पांव, अमर वल्लरी, कांटों का वन जैसी रचनाएं हैं। लोक साहित्य से जुड़ी रचनाओं में अवधी लोकगीत का समीक्षात्मक अध्ययन, चंदन चौक, अवधी लोक नृत्य गीत, सीता सुरुजवा क ज्योति, उत्तर प्रदेश की लोक कलाएं जैसी रचनाएं हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय लोक संस्कृति की विविधता और समृद्धि को अद्वितीय तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कहानियाँ, कविताएं, नाटक, और लेखन उनकी अद्भुत रचनात्मक प्रतिभा को दर्शाते हैं और लोक संस्कृति की महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उन्होंने भारतीय जनजातियों, ग्रामीण समाज, और परंपराओं के विविध पहलुओं को विस्तार से छायांकित किया है। विधा बिंदु सिंह के लेखन से लोक संस्कृति के महत्व को समझने और उसकी समृद्धि को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए, उन्हें ''लोक संस्कृति के अदिति प्रवक्ता'' के रूप में समझा जाता है।

निष्कर्ष

डॉ. विद्या विंदु सिंह के कथा साहित्य में लोक संस्कृति और लोक चेतना के महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने के लिए, हमें उनकी रचनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। उनकी कहानियाँ गाँव के जीवन, लोक कथाएँ, परंपराएँ, और संस्कृति को महसूस करने और समझने के लिए प्रेरित करती हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उनके लेखन में लोक संस्कृति के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों के माध्यम से, वे लोगों को अपनी संस्कृति, परंपराओं, और लोकतांत्रिक मूल्यों का महत्व बताते हैं और उन्हें उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार, डॉ. विद्या विंदु सिंह के की रचनाएँ लोक संस्कृति और लोक चेतना को बढ़ावा देती हैं और रचनाओं के माध्यम से भावात्मक बुद्धि एवं स्व–जागरूकता को संवेदनशीलता के साथ व्यक्त करती हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

- https://www.knocksense.com/hindi/uttar-pradesh-hindi/padmashree-dr-vidya-bindu-singh-a-well-known-writer-who-easily-brought-awadhi-folk-literature-to-the-
- https://www.hindisamay.com/writer
- https://samarsaleel.com/nagendra-received-padma-shri-dr-vidya-bindu-singh-folk-culture-flag-bearer-award-2022/306092

- https://www.prabhatbooks.com/upload/(HB)-Hindi.pdf

साहित्यिक पुस्तक

- (हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी, पृष्ठ सं–88)
- (हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी पृ.सं 104)
- (हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी पृ.सं 107)
- (शिलान्तर, पृ.सं. 133)
- भारतीय संस्कृति साहित्य एवं कला का समग्र हिन्दी त्रैमासिक, **नारायणीयम्** अकं 4 अक्टूबर. दिसम्बर 2016

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...